IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड–19, भौगोलिक प्रभाव – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

वीरेंद्र कुमार
सहायक आचार्य
बियानी गर्ल्स कॉलेज, जयपुर

सारांशः– व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा अनुभव से ज्ञान प्राप्त करता है सामान्य रूप से तथ्यों तथा सिद्धांतों की जानकारी ही ज्ञान का आधार होती है। जिज्ञासा, कोतूहल, शिक्षण परिश्रम मनन आदि ज्ञान के भंडार को बढ़ाने में व्यक्ति की सहायता करते हैं इसी क्रम में भूगोल की बात करें तो इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान किया जाता है भूगोल शब्द का अर्थ सामान्यता पृथ्वी का अध्ययन माना जाता है आधुनिक भूगोल मानव प्रेम सौहार्द तथा विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित ही नहीं वरन अंगीकृत करते हुए मानवीय मूल्यों को संरक्षित करने और प्रस्फुटित करने की दिशा में प्रेरित करता है वर्तमान कोविड–19 महामारी के दौरान संपूर्ण विश्व में विभिन्न भौगोलिक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन शोध पत्र के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है कोविड–19 महामारी के दौरान सरकार के द्वारा लिए गए लॉकडाउन निर्णय से दिखाई दिए गए विभिन्न वातावरणीय प्रभाव जिनके अंतर्गत वातावरण का स्वच्छ हो जाना नदियों का स्वच्छ हो जाना तथा जीव जंतुओं का स्वतंत्र व निर्भीक रूप से विचरण करना तथा सामान्य जनजीवन पर सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव दृष्टिगत हुए लॉकडाउन के अंतर्गत हुए आकस्मिक परिवर्तन संपूर्ण मानव जाति को भविष्य में प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाते हुए विकास की ओर अग्रसर होने की शिक्षा प्रदान करता है आज जहां मनुष्य अपनी बुद्धि एवं कौशल के आधार पर विकास के चरण स्तर पर पहुंच चुका है किंतु प्रकृति के साथ के बिना वह आज भी अधूरा है अतः हमें भविष्य में अपने स्वार्थ की भावना को त्याग कर प्रकृति प्रेम व सौहार्द की भावना को विकसित कर संपूर्ण मानवीय समाज के हित को ध्यान में रखते हुए प्रकृति के नियमों की पालना सदैव करनी होगी।

मूल शोध पत्र

व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा अनुभव से ज्ञान प्राप्त करता है सामान्य रूप से तथ्यों तथा सिद्धांतों की जानकारी ही ज्ञान का आधार होती है। जिज्ञासा, कोतूहल, शिक्षण परिश्रम मनन आदि ज्ञान के भंडार को बढ़ाने में व्यक्ति की सहायता करते हैं व्यक्ति के पास ज्ञान की मात्रा ज्यो–ज्यों बढ़ती जाती है, उसकी और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की ललक भी बढ़ती है, इसी ललक में वह ज्ञान प्राप्त करने के लिए सुनियोजित तथा व्यवस्थित प्रयास करता है, यह प्रयास ही अनुसंधान का रूप धारण करते हैं अनुसंधान करने से जो परिणाम तथा निष्कर्ष निकलते हैं पुनः व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करते हैं।इस प्रकार ज्ञान तथा अनुसंधान कि यह श्रृंखला अनवरत चलती रहती है।

इसी क्रम में भूगोल की बात करें तो इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान किया जाता है भूगोल शब्द का अर्थ सामान्यता पृथ्वी का अध्ययन माना जाता है। आधुनिक भूगोल मानव प्रेम सौहार्द तथा विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित ही नहीं, वरन अंगीकृत करते हुए मानवीय मूल्यों को संरक्षित करने और प्रस्फुटित करने की दिशा में प्रेरित करता है प्राकृतिक वातावरण तथा मानव जीवन में परस्पर क्या संबंध है तथा इन दोनों में क्या तथा कैसी क्रियाएं प्रतिक्रियाएं हुई है, इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस विषय का अध्ययन कई रूपों में होता है। पृथ्वी के धरातल पर कुछ घटनाएं होती है जो मनुष्य के धरातल पर रहने से होती है इसमें भौगोलिक परिस्थितियों के उस प्रभाव का भी अध्ययन किया जाता है, जो मनुष्य के रहन–सहन स्वभाव तथा मानसिक एवं शारीरिक अवस्था पर पड़ता है इसका चित्र बहुत ही विस्तृत है पृथ्वी धरातल प्रकृति पर घटना अवश्य घटित होती है चाहे मनुष्य उस पर रहे चाहे ना रहे इन घटनाओं का अध्ययन प्राकृतिक भूगोल का क्षेत्र है जिन उद्देश्यों को लेकर हम भूगोल में अनुसंधान करते हैं यह निम्न प्रकार है–

भूगोल अनुसंधान के सामान्य उद्देश्य

1. आर्थिक योजनाएं बनाने में मदद

2. प्राकृतिक साधनों का महत्व समझाना

3. नागरिकता के कर्तव्य क्या ज्ञान

4. भूगोल का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का ज्ञान

5. मस्तिष्क का विकास

6. राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय घटनाओं में रुचि उत्पन्न करना

7. सौंदर्य भावना का विकास

8. अवकाश के समय का सदुपयोग

9. जीवन यापन में मददगार

10. सामाजिक वातावरण का बेहतर अध्ययन

11. कल्पना शक्ति का विकास

12. विश्व बंधुत्व की भावना का विकास

13. देश प्रेमी की भावना का विकास

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान परिदृश्य में कोविड–19 महामारी के कारण कई भौगोलिक बहुआयामी प्रभाव सामान्यत पृथ्वी पर सर्वत्र दिखाई दे रहे हैं। कोविड–19 महामारी द्वारा भविष्य में आने वाली भावी पीढ़ी के समक्ष दीर्घकालिक मुद्दे भी रख दिये हैं। जिनमें– भौगोलिक प्रभाव भारत की वर्तमान स्वास्थ्य सेवा–क्षमता को देखते हुए, अन्य कई उपायों के समक्ष लॉकडाउन से बेहतर कोई उपाय नहीं था, जबकि लॉकडाउन देश में सामाजिक–आर्थिक परिणाम अत्यंत भयावह हैं, जैसे प्रवासी संकट किन्तु इसने पर्यावरण–गुणवत्ता में सुधार के अनेक उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत किए हैं, जो वर्तमान विश्व के लिए एक सबक है। जानवर जंगलों से बाहर आकर सड़कों पर स्वतंत्रता से घूम रहे हैं, अधिक संख्या में पक्षी अपने पसंदीदा स्थानों की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, जलीय जीवों को उन स्थानों पर देखा जा रहा है जिन्हें उन्होंने सदियों पहले छोड़ दिया था, और अन्य स्थानों पर वायु और जल की गुणवत्ता बेहतर हो गई है। उदाहरण स्वरूप यमुना नदी का स्वच्छ हो जाना, हिमालय की तलहटी मैं बसे प्रदेशों से हिमालय का स्पष्ट दिखाई देना आदि।

अभी पर्यावरणीय गुणवत्ता में बदलाव अल्पावधि के हैं, यानी वे उस लॉकडाउन के अस्थायी प्रभाव हैं जिसे कोविड–19 के प्रसार को कम करने के लिए लागू किया गया था प्रत्येक दिन हमारे वातावरण में होने वाली घटनाओं के मिश्रण को ''मौसम परिवर्तन'' कहा जाता है। हालाँकि जो वास्तव में मायने रखता है, वह है 'जलवायु परिवर्तन' जो कि एक लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें किसी विशिष्ट क्षेत्र में लंबे समय तक मौसम में परिवर्तन पर नजर रखी जाती है। ये निश्चित रूप से ऐसा समय है जो विश्व के नेताओं को वैश्विक तापमान वृद्धि को 2030 तक 1डिग्री सेल्सियस (या इससे भी कम) सीमित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के तरीकों को खोजने, नवीन कार्य योजनाएं बनाने व उन्हें लागू करवाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते है।

पर्यावरण की अनदेखी से भविष्य में ऐसी और महामारियां विनाश का कारण हो सकती है, हमारी आबो–हवा और जैव विविधता जो कि जलवायु नीति का अहम हिस्सा है,का संबंध इस संकट से है। दुनिया में तमाम देशों की जीडीपी पर जैसा असर कोरोना संकट अभी डाल रहा है, वही असर पिछले कम से कम चार दशकों से विकासशील और गरीब देशों पर जलवायु परिवर्तन की वजह से पड़ता रहा है।

आज जलवायु परिवर्तन को रोकने से लेकर सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लक्ष्य (एसडीजी) को हासिल करने की कोशिश में यह बात ध्यान रखना ज़रूरी है।. हमें अब इस बारे में सोचना चाहिये कि हम इन अंर्तसम्बन्धों को कैसे समझ सकते हैं.,जलवायु भी एक कारक है जो इस हालात (कोरोना वायरस) के पीछे है. अगर हम जंगलों को इस तरह अंधाधुंध नहीं काटते, अगर वन्य जीवों का हैबिटाट (बसेरा) साल दर साल यूं नहीं सिकुड़ता, जंगली जानवर इस तरह से मनुष्यों और पालतू जानवरों के संपर्क में नहीं आते तो शायद यह हालात पैदा नहीं होते. आखिरकार मनुष्य बनाम वन्य जीव की स्थिति से जो दबाव बनता है अब हम देख रहे हैं कि वो सारी चीज़ें आपस में जुड़ी हुई हैं." अर्थात मानव को प्रकृति के साथ रहकर ही अपने विकास के रथ पर सवार होना चाहिए।

कोरोना महामारी फैलते ही दुनिया के ज़्यादातर देशों में ज़िंदगी ठहर गई, कामधंधे रोक दिये गये, वाहनों, रेलगाड़ियों का चलना बन्द व उड़ानें ठप हो गईं. होटल, रेस्तंरा और क्लब बन्द कर दिये गये. ज़ाहिर तौर पर पर्यावरण में साफ बदलाव दिख रहा है. न केवल प्रदूषण कम है, बल्कि तमाम अमीर और घने उद्योगों वाले देशों के कार्बन इमीशन तेज़ी से गिरे हैं। चीन की मिसाल लें तो जब वहां कोरोना का कहर सबसे अधिक था तो कार्बन उत्सर्जन 30 प्रतिशत कम हो गये।

कोरोना संकट भारत में कब तक चलेगा और यह हमारी भौगोलिक व्यवस्था को कितना प्रभावित करेगा, इसका स्पष्ट अंदाज़ा अभी नहीं लगाया जा सकता लेकिन यह तय है कि यह हमारी सामाजिक–आर्थिक हालात को काफी आघात पहुंचा सकता है. ऐसे में वैश्विक जलवायु नीति पर अपना प्रभाव बनाना और देश के हितों की रक्षा करना कोरोना संकट के बाद सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिये.

मुख्य बिंदु–

कोविड–19, लॉकडाउन, मौसम परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, जीडीपी, अंधाधुंध, महामारी, वैश्वीकरण।

निष्कर्ष– भौगोलिक विश्लेषणात्मक अनुसंधान के आधार पर वर्तमान मनुष्य जाति को प्राकृतिक नियमों की अनदेखी करना भविष्य में अंधकार की ओर ले जाने जैसा हो सकता है। अतः मानव प्रकृति के बीच रहकर प्रकृति के नियमों की पालना करते हुए भावी विकास की योजनाओं का क्रियान्वयन करना चाहिए। मनुष्य आज भी प्रकृति के पुत्र के समान है जोप्रकृति को मां का दर्जा देते हुए, उसका सम्मान करना आवश्यक है जिस प्रकार एक मां अपने पुत्र का पोषण करती है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति मानव का पोषण करती है। मनुष्य के द्वारा प्रकृति की स्वच्छता हेतु विभिन्न वातावरण को सुरक्षित रखना चाहिए। अतः विश्व स्तर पर सामूहिक रूप प्राकृतिक सुरक्षा के संबंध में कार्य किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. डॉ सविंद्र सिंह – जलवायु विज्ञान

2. श्रीमती आरके शर्मा / एच.एस शर्मा – पर्यावरण अध्ययन शिक्षण

3. डॉ. अशोक कुमार सिधाना / डॉ. किरण सीडाना – भौतिक एवं जैविक पर्यावरण शिक्षा

पत्र पत्रिकाएं–

1. दैनिक भास्कर

2. राजस्थान पत्रिका

3. दैनिक नवज्योति